❍ 25 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *अपने पूज्य स्वरुप का अनुभव किया ?*

➢➢ *स्वपन मात्र भी अपवित्रता ने मन और बुधी को टच तो नहीं किया ?*

➢➢ *स्वयं को बाप के संग का रंग लगाया ?*

➢➢ *उमंग से सेवाएं की ?*

————————————————————

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ *पहला पाठ आत्मिक स्मृति का पक्का करो। आत्मा इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कर रही है। तो अन्य आत्माओं का भी कर्म देखते हुए यह स्मृति रहेगी कि यह भी आत्मा कर्म कर रही है।* ऐसे अलौकिक दृष्टि, जिसको देखो आत्मा रूप में देखो। *इससे हर एक कर्मेन्द्रिय सतोप्रधान स्वच्छ हो जायेगी।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं वरदानी आत्मा हूँ"*

〰✧ सब वरदानी आत्मायें हो ना? इस समय विशेष भारत में किसकी याद चल रही है? वरदानियों की। *देवी अर्थात् वरदानी, देवियों को विशेष वरदानी के रूप में याद करते हैं, तो ऐसा महसूस होता है कि हमें याद कर रहें है? अनुभव होता है?* भक्तों की पुकार महसूस होती है कि सिर्फ नालेज के आधार से जानते हो?

〰✧ एक है जानना दूसरा है अनुभव होना। तो अनुभव होता है? वरदानी मूर्त बनने के लिए विशेषता कौन सी चाहिए? आप सब वरदानी हो ना। तो वरदानी की विशेषता क्या है? *वे सदा बाप के समान और समीप रहने वाले होगें। अगर कभी बाप समान और कभी बाप समान नहीं लेकिन स्वयं के पुरूषाथी तो वरदानी नहीं बन सकते।*

〰✧ क्योंकि बाप पुरूषार्थ नहीं करता लेकिन सदा सम्पन्न स्वरूप में है तो अगर बहुत पुरूषार्थ करते हैं तो पुरूषार्थी छोटे बच्चे हैं, बाप समान नहीं। *समान अर्थात् सम्पन्न। ऐसे सदा समान रहने वाले सदा वरदानी होगें।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ (ड्रिल बहुत अच्छी लग रही थी) यह रोज हर एक को करनी चाहिए। ऐसे नहीं हम बिजी है। बीच में समय प्रति समय एक सेकण्ड चाहे कोई बैठा भी हो, बात भी कर रहा हो, लेकिन एक सेकण्ड उनको भी ड़िल करा सकते हैं और स्वयं भी अभ्यास कर सकते हैं। कोई मुश्किल नहीं है। *दो-चार सेकण्ड भी निकालना चाहिए इससे बहुत मदद मिलगी।*

〰✧ नहीं तो क्या होता है, सारा दिन बुद्धि चलती रहती है ना, तो विदेही बनने में टाइम लग जाता है और बीच-बीच में अभ्यास होगा तो जब चाहे उसी समय हो जायेंगे क्योंकि अंत में सब अचानक होना है। तो *अचानक के पेपर में यह विदेही-पन का अभ्यास वहुत आवश्यक है।*

〰✧ ऐसे नहीं बात पूरी हो जाए और विदेही बनने का पुरुषार्थ की करते रहें। तो सूर्यवंशी तो नहीं हुए ना! इसलिए *जितना जो बिजी है, उतना ही उसको बीच-बीच में यह अभ्यास करना जरूरी है।* फिर सेवा में जो कभी-कभी थकावट होती है, कभी कुछ-न-कुछ आपस में हलचल हो जाती है, वह नहीं होगा। अभ्यासी होंगे ना।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ सारे दिन में सूक्ष्म वतनवासी कितना समय होकर रहती हो कि स्थूल सेवा ज़्यादा है? आप लोग कितना भी बिज़ रही, बाप तो अपना कार्य करा ही लेते हैं। अपने सम्पूर्ण आकार का अनुभव किया है? *जैसे साकार आकार हो गये, आप सबका भी सम्पूर्ण आकारी स्वरूप है।* जो नम्बरवार हरेक साकार-आकार बन जायेंगे। आकार बन करके सेवा करना अच्छा है या साकार शरीर परिवर्तन कर सेवा करना अच्छा है? *एडवान्स पार्टी तो साकार शरीर परिवर्तन कर सेवा कर रही है।* लेकिन कोई-कोई का पार्ट अन्त तक साकारी और आकारी रूप द्वारा भी चलता है। आपका क्या पार्ट है? किसका एडवान्स पार्टी का पार्ट है, किसका अन्त:वाहक शरीर द्वारा सेवा का पार्ट है। दोनों पार्ट का अपना-अपना महत्व है। फस्ट, सेकेण्ड की बात नहीं। वैराइटी पार्ट का महत्व है। एडवान्स पार्टी का भी कार्य कोई कम नहीं है। सुनाया ना वह ज़ोर-शोर से अपने प्लैन बना रहे हैं। वहाँ भी नामीग्रामी हैं।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- हाइएस्ट और होलीएस्ट आत्मा बनना"*

➳ _ ➳ आँगन में कौड़ी खेलते बच्चों को देख मै आत्मा... मुस्कराती हूँ... और मुझे भी कौड़ी से हीरे जैसा बनाने वाले... मीठे बाबा की यादो में डूब जाती हूँ... अपने प्यारे बाबा से मीठी मीठी बाते करने... मीठे वतन में पहुंचती हूँ... प्यारे बाबा रत्नागर को देख ख़ुशी से खिल जाती हूँ... और मीठे बाबा के प्यार में डूबकर... अपनी ओज भरी चमक, मीठे बाबा को दिखा दिखाकर लुभाती हूँ... *देखो मीठे बाबा... मै आत्मा आपके साये में कितनी प्यारी, चमकदार और हीरे जैसी अमूल्य हो गयी हूँ.*.."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने महान भाग्य का नशा दिलाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *ईश्वर पिता धरती पर अपने फूल बच्चों के लिए अमूल्य खजानो और शक्तियो को हथेली पर सजा कर आये है.*.. इस वरदानी समय पर कौड़ी से हीरो जैसा सज जाते हो... और यादो की अमीरी से, देवताई सुखो की बहारो भरा जीवन सहज ही पाते हो...

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के ज्ञान खजाने से स्वयं को लबालब करते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... आपको पाकर तो मुझ आत्मा ने जहान पा लिया है... देह और दुखो की दुनिया में कितनी निस्तेज और मायूस थी... *आपने आत्मा सितारा बताकर मुझे नूरानी बना दिया है... फर्श उठाकर अर्श पर सजा दिया है*.."

❉ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा को अपने नेह की धारा में भिगोते हुए कहते है :- * "मीठे लाडले प्यारे बच्चे... अपने प्यारे से भाग्य को सदा स्मर्तियो में रख खुशियो में मुस्कराओ... ईश्वर पिता का साथ मिल गया... भगवान स्वयं गोद में बिठाकर पढ़ा रहा... सतगुरु बनकर सदगति दे रहा... *एक पिता को पाकर सब कुछ पा किया है... निकृष्ट जीवन से श्रेष्ठतम देवताई भाग्य पा रहे हो*..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की अमीरी को अपनी बाँहों में भरकर मुस्कराते हुए कहती हूँ :-* "मेरे सच्चे साथी बाबा... आपने आकर मेरा सच्चा साथ निभाया है... दुखो के दलदल से मुझे हाथ देकर सुखो के फूलो पर बिठाया है... *सच्चे स्नेह की धारा में मेरे कालेपन को धोकर... मुझे निर्मल, धवल बनाया है.*.. मुझे गुणवान बनाकर हीरे जैसा चमकाया है..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को काँटों से फूल बनाते हुए कहा :-* " मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... भगवान के धरती पर उतर आने का पूरा फायदा उठाओ... ईश्वरीय सम्पत्ति को अपना अधिकार बनाकर, सदा की अमीरी से भर जाओ... *ईश्वर पिता के साये में गुणवान, शक्तिवान बनकर, हीरे जैसा भाग्य सजा लो..*. और सतयुगी दुनिया में अथाह सुख लुटने की सुंदर तकदीर को पाओ...

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने दुलारे बाबा को दिल से शुक्रिया करते हुए कहती हूँ :-* "मनमीत बाबा मेरे... विकारो के संग में, मै आत्मा जो कौड़ी तुल्य हो गयी थी... *आपने उस कौड़ी को अपने गले से लगाकर, हीरे में बदल दिया है.*.. मै आत्मा आपके प्यार की रौशनी में, कितनी प्यारी चमकदार बन गयी हूँ... अपनी खोयी चमक को पुनः पाकर निखर गयी हूँ..."मुझे हीरे सा सजाने वाले खुबसूरत बनाने वाले रत्नागर बाबा... को दिल से धन्यवाद देकर मै आत्मा.. स्थूल वतन में आ गयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- अपने पूज्य स्वरूप का अनुभव*"

➳ _ ➳ एक मंदिर में खड़ी मैं अपने ही जड़ चित्रों को देख विचार करती हूँ कि कितना आकर्षण है मेरे इन जड़ चित्रों में जो आज भी इनके दर्शन मात्र से भक्तों की हर मनोकामना पूर्ण हो रही हैं। *इन जड़ चित्रों में भक्तों की कितनी

आस्था है जो इनकी एक झलक पाने के लिए ये घण्टों लम्बी - लम्बी कतारों में खड़े हो कर कठोर तपस्या कर रहें हैं*। मन ही मन यह चिंतन करते - करते अपने जड़ चित्रों में अपने चैतन्य श्रेष्ठ जीवन का साक्षात्कार करते हुए अब मैं स्वयं को अपने चैतन्य देवताई स्वरूप में देख रही हूँ।

➳ _ ➳ अष्ट शक्तियों से सम्पन्न अष्ट भुजाधारी दुर्गा के स्वरूप में मंदिर में खड़ी मैं अपने सामने असंख्य भक्तों की भीड़ को देख रही हूँ। *मेरी महिमा के गीत गाते, जयजयकार के नारे लगाते मेरे भक्त मस्ती में झूम रहें हैं*। मेरे दर्शन पाकर भाव विभोर हो रहें हैं। अपने जीवन मे सुख शांति की कामना के लिए मेरे सामने हाथ जोड़ कर अरदास कर रहें हैं। अपना वरदानी हाथ ऊपर उठाये मैं उनकी झोली वरदानो से भरकर उनकी हर मनोकामना को पूर्ण कर रही हूँ। *अपनी मनोकामना को पूर्ण होता देख वो खुशी से फूले नही समा रहे*।

➳ _ ➳ अपने भक्तों को दर्शन देकर, उनकी हर मनोकामना को पूर्ण करके मैं अपने ब्राह्मण स्वरूप में लौटती हूँ और विचार करती हूँ कि अपने जड़ चित्रों में अपने श्रेष्ठ जीवन का जो साक्षात्कार अभी मैंने किया है वो मेरे अभी के ब्राह्मण जीवन के चैतन्य कर्मो का ही तो यादगार है। *मेरे द्वारा इस समय किये हुए हर एक कर्म को मेरे भक्त आज भी कॉपी कर रहें हैं। इस समय संगमयुग पर जिन दैवी गुणों को मैं धारण करने का पुरुषार्थ कर रही हूँ उनका ही भक्ति में पूजन और गायन हो रहा है*।

➳ _ ➳ तो इसलिए अपने भविष्य चैतन्य श्रेष्ठ देवताई जीवन का सुख पाने और कल्प - कल्प के लिए पूजनीय वा गायन योग्य बनने के लिए सभी विशेषताओं को मुझे अपने इस ब्राह्मण जन्म में अभी ही धारण करने का पुरुषार्थ करना है। *इसी दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ ब्रह्मा बाप समान पुरुषार्थ करने का दृढ़ संकल्प कर, अब मैं अपने ब्राह्मण स्वरूप से फ़रिश्ता स्वरूप में स्थित होती हूँ और अव्यक्त वतनवासी अपने प्यारे ब्रह्मा बाप से मिलने उनके वतन की ओर चल पड़ती हूँ*। वतन में पहुँच कर अपने प्यारे ब्रह्मा बाबा और उनकी भृकुटि में अत्यंत तेजोमय महाज्योति शिव बाबा को मैं देख रही हूँ।

➳ ➳ अपनी बाहों को फैलाये बापदादा मझे अपने पास बला रहें हैं।

अपनी बाहों में समाकर अपनी ममतामयी स्नेह की शीतल छाया में मुझे बिठा कर अब बापदादा अति स्नेह भरी, शक्तिशाली दृष्टि से मुझे भरपूर कर रहें हैं। बाबा की भृकुटी से प्रकाश की अनन्त धाराएं निकल कर मुझ पर पड़ रही हैं। मेरे मस्तक पर मीठा सा स्पर्श करके अपनी सर्वशक्तियाँ बाबा मुझे प्रदान कर रहें हैं। उनके प्यार की शीतल छाया में मैं असीम सुख और आनन्द का अनुभव कर रही हूँ। *बापदादा अपना वरदानीमूर्त हाथ मेरे सिर पर रख कर मुझे "पूज्य भव" का वरदान दे रहें हैं*।

➳ _ ➳ बापदादा से वरदान और सर्वशक्तियां लेकर, इस वरदान को फलीभूत करने के लिए अब मैं फ़रिश्ता स्वरूप से वापिस अपने ब्राह्मण स्वरुप में स्थित हो जाती हूँ और अपने भविष्य चैतन्य देवताई पूज्य पद को पाने के पुरुषार्थ में लग जाती हूँ। *अपने जड़ चित्रों को सदैव स्मृति में रख, अपने हर श्रेष्ठ कर्म के यादगार को चरित्रों और गीतों के रूप में देखते और सुनते, अपने चैतन्य श्रेष्ठ जीवन का साक्षात्कार करते हुए अब मैं अपने हर कर्म को श्रेष्ठ बना रही हूँ*। सहज स्नेह के साथ चारों सब्जेक्ट में पवित्रता, स्वच्छता, सच्चाई और सफाई को धारण कर मैं पूजन और गायन योग्य बनने के अपने लक्ष्य को पाने का तीव्र पुरुषार्थ अब निरन्तर कर रही हूँ।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं संगमयुग पर हर समय, हर संकल्प, हर सेकण्ड को समर्थ बनाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं ज्ञान स्वरूप आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सेवा में सदा जी हाज़िर करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा प्यार का सच्चा सबूत देती हूँ ।*
✺ *मैं सच्ची सेवाधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बस खुश रहना, कभी भी मूड आफ नहीं करना। सदा एकरस खुशनुम: चेहरा हो। जो भी देखे उसे रूहानी खुशी की अनुभूति हो। यह सेवा का साधन है। *चेहरे पर रूहानी खुशी हो, साधारण खुशी नहीं, रूहानी खुशी। फेस चेंज नहीं हो। जैसे एकरस स्थिति, वैसे ही एकरस चेहरा हो।* हो सकता है? एकरस मूड हो? हो सकता है या होना ही है? होगा ना अभी? कभी भी कोई भी अचानक आपका फोटो निकाले तो और कोई फोटो नहीं आवे, रूहानी मुस्कराहट का फोटो हो। *चाहे कामकाज भी कर रहे हो, सर्विस का बहुत टेन्शन हो लेकिन चेहरे पर खुशी हो। फिर आपको ज्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ेगी। एक घण्टा बोलने के बजाए अगर आपका रूहानी मुस्कान का चेहरा होगा तो वह एक घण्टे के बोलने की सेवा एक सेकण्ड में करेगा क्योंकि प्रत्यक्ष को प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं होती है।* जो भी मिले, जैसा भी मिले, गाली देने वाला मिले, इनसल्ट करने वाला मिले, इज्जत न रखने वाला मिले, मान-शान न देने वाला मिले, लेकिन आपका एकरस चेहरा, रूहानी मुस्कान। हो सकता है? कुमार हो सकता है? पाण्डव हो सकता है? और परुषार्थ से बच जायेंगे। मेहनत नहीं

लगेगी। मुझे रूहानी मुस्कान ही मुस्कराना है। कुछ भी हो जाए, मुझे अपनी मुस्कान छोड़नी नहीं है, हो सकता है? सोच रहे हैं? (करके दिखायेंगे) बहुत अच्छा, मुबारक हो!

✺ *ड्रिल :- "सदा रूहानी मुस्कान ही मुस्कराना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी साकारी देह से उपराम हो, स्वयं को मस्तक के बीचोंबीच एक चमकता हुआ सितारा देख रही हूँ... टिमटिमाता मैं नन्हा सा सितारा इस देह में चैतन्य शक्ति हूँ जो इस स्थूल देह को चलाती हूँ... *मैं चैतन्य शक्ति आत्मा इस देह को छोड़, इस साकारी दुनिया को भी पीछे छोड़ ऊपर की ओर उड़ जाती हूँ... और सूक्ष्म वतन में अपने बाबा के पास आकर बैठ जाती हूँ...*

➳ _ ➳ आज मैं आत्मा बाबा के सम्मुख बैठ कर अपने ब्राह्मण जीवन की प्राप्तियों को याद कर रही हूँ... जब से बाबा ने मुझे अपना बच्चा बनाया तब से मैं आत्मा अपने हर दुख को भूल खुशियों के झूले में झूल रही हूँ... हर पल मीठे बाबा की छत्रछाया में रह मैं आत्मा साक्षी हो कर हर सीन को देख रही हूँ... *कैसी भी परिस्थिति हो मैं आत्मा बाबा के ये महावाक्य याद रखती हूँ कि बच्चे सदा खुश रहना, कभी भी मूड ऑफ मत करना...* मैं आत्मा बाबा की इस बात को बुद्धि में बिठाकर सदा खुश रहती हूँ... कभी किसी बात से मेरा मूड थोड़ा ठीक नहीं भी होता तो बाबा ये महावाक्य मुझमें नया उमंग उत्साह भर देते हैं...

➳ _ ➳ मेरा खुशनुमा चेहरा अन्य आत्माओ के चेहरे पर भी ख़ुशी ले आता है... *ये साधारण ख़ुशी नहीं रूहानी ख़ुशी है जो मेरे बाबा से इस ब्राह्मण जीवन मे मुझे सौगात मिली है...* अपने चेहरे पर रूहानी मुस्कान के साथ मैं आत्मा बिना एक भी शब्द कहे सहज रूप से सभी के चेहरों पर भी मुस्कान ले आती हूँ...

➳ _ ➳ बाबा ने हम बच्चों से कहा है कि कैसी भी परिस्थिति हो पर स्वस्थिति हमेशा एक रस हो... परिस्थिति ऊपर नीचे होने से स्वस्थिति ऊपर

नीचे ना हो... मैं आत्मा बाबा का फरमानबरदार बच्चा बाबा की इस बात को मन में बिठा जीवन की हर उलझन को हँसते हँसते सुलझा रही हूँ... *कार्य व्यवहार में आते या लौकिक संबंधों को निभाते हुए कोई पेपर भी आता है तो भी मेरे चेहरे से रूहानी खुशी गायब नहीं होती... मैं आत्मा अपने चेहरे की खुशी और मुस्कान से सेवा करती हूँ... मेरी रूहानी मुस्कान देख अन्य आत्माएं भी अपने दुखों को भूल जाती हैं...*

➳ _ ➳ कितना प्यार दिया मेरे बाबा ने मुझे जो अब किसी संबंध से प्यार मिले न मिले तो भी मैं आत्मा सदा खुश हूँ... *कोई मान दे या ना दे, कोई इंसल्ट करे या अपमान करे तो भी मुझ आत्मा के चेहरे से रूहानी मुस्कान कभी गायब नहीं होती...* बाबा के प्यार में खोयी मैं आत्मा मेहनत से छूटती जा रही हूँ... अब मुझे पुरूषार्थ में मेहनत नहीं करनी पड़ती... मैं सहज पुरुषार्थी बनती जा रही हूँ... अपने बाबा का दिल से शुक्रिया कर रही हूँ और वापिस अपने मस्तक के मध्य आकर बैठ जाती हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔